आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 01 अंक : 09 बीकानेर, मई, 2014 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति का संदेश

पशुओं का कल्याण

विश्व वेटरनरी दिवस वर्ष के अप्रेल माह के अंतिम शनिवार के दिन पूरी दुनिया में मनाया जाता है। वर्ष 2014 को ''पशु कल्याण'' वर्ष घोषित किया गया है। 26 अप्रेल को समारोह पूर्वक इस दिवस का आयोजन किया गया। पशुओं के कल्याण में हमारे जीवन का सामाजिक और आर्थिक पहलू जुड़ा हुआ है। भारत जैसे प्राचीन सभ्यता और संस्कृति वाले देश में पशु–पक्षियों को देवता तुल्य मानते हुए प्यार,करुणा और दया का भाव प्रत्येक देशवासी के मन और मस्तिष्क में है। निरीह और मूक प्राणियों की सेवा को एक पवित्र कार्य माना गया है। हम पशुओं के प्रति सकारात्मक सोच, सम्यक व्यवहार और पर्यावरण अनुकूलन रखते हुए ही कल्याण की अवधारणा को पुष्ट कर सकते हैं। मेरे विचार से भूख–प्यास से मुक्त, बेहत्तर रहवाईश और स्वस्थ पशुधन का मायना ही पशु–कल्याण है। वेटरनरी विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के बाद से ही बेहत्तर पशुचिकित्सा सेवाएं देकर उनके कल्याण के प्रति संकल्पबद्ध है। विश्वविद्यालय के बीकानेर, उदयपुर (वल्लभनगर) और जयपुर स्थित परिसरों में आधुनिक तकनीक से युक्त पशु क्लिनिक और एम्बूलेंस सेवाओं का सुदृढ़ीकरण किया गया है। राज्य के प्रत्येक जिले में प्रभावी चिकित्सा सेवाओं की जांच प्रयोगशालाएं, अनुसंधान और प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं जिनसे गांव–ढ़ाणी तक पशुपालकों को इससे लाभ मिल सके। वेटरनरी कॉलेज बीकानेर की पशुचिकित्सा क्लिनिक्स में क्रिटिकल केयर यूनिट, वातानुकूलित पशुचिकित्सा वार्ड की स्थापना देश में अपनी किस्म का एक अनूठा प्रयास है। यहां छोटे–बड़े पशुओं के लिए पृथक–पृथक वातानुकूलित शल्य चिकित्सा कक्ष, अत्याधुनिक अल्ट्रा सोनोग्राफी, एक्स–रे और रोग निदान जांच की प्रयोगशालाओं को अत्याधुनिक स्वरूप दिया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा आगजनी से पशुओं के बचाव के लिए अग्निरोधक हट का मॉडल भी विकसित किया गया है। राज्य के चिड़ियाघरों में वन्य प्राणियों में आंतरिक परजीवियों के प्रकोप पर एपेक्स सेन्टर द्वारा अध्ययन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के पांच गौवंश अनुसंधान केन्द्रों से श्रेष्ठ नस्ल के 350 बछड़े और सांड राज्य की गौशालाओं को मुहैय्या करवाये गये हैं। पशुओं के पोषण युक्त खाद्य, हरा चारा उत्पादन कार्य के लिए भी कृषकों और पशुपालकों को प्रेरित किया जा रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा ''पशुपालन नए आयाम'' मासिक पत्रिका एंव पशु आहार एवं चारा बुलेटिन पर त्रैमासिक पत्रिका तथा पशुपालन से संबद्ध अनेकों वैज्ञानिक और उपयोगी प्रकाशन पशुपालकों के हित में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। प्रत्येक माह पशुओं के पूर्व रोग अनुमान बुलेटिन, आकाशवाणी बीकानेर से प्रत्येक गुरूवार सायः 7.15 बजे वैज्ञानिक वार्ताओं का प्रसारण और पशुपालक–कृषकों को टोल फ्री दूरभाष सेवाएं भी उपलब्ध करवाई जा रही हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय अपनी शैक्षणिक, प्रसार और अनुसंधान कार्यो के मार्फत पशुकल्याण के लिए कटिबद्ध है। आपका सहयोग कामयाबी के लिए जरूरी है।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

WORLD VETERINARY DAY 2014

Saturday, 26 April 2014

विश्व पशुचिकित्सा दिवस के अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई। हम नीले अम्बर में पशुचिकित्सा पेशे की बढोत्तरी की मशाल से रोशन करें। आइए! अपने पवित्र पेशे की छवि को उज्जवल बनाने की प्रतिज्ञा करें –

–प्रो. ए. के. गहलोत

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुरोग के निदान, उपचार और प्रशिक्षण में अग्रणी–एपेक्स सेन्टर

वेटरनरी विश्वविद्यालय के एपेक्स सेन्टर की स्थापना अक्टूबर 1985 में की गई। राज्य में पशु चिकित्सकों के लिए उनके क्षेत्र में होने वाले पशु रोगों के त्वरित निदान और उपचार कार्यों में सहायता करना इसका प्रमुख उद्देश्य है। केन्द्र और राज्य के पशुपालन विभाग और सम्बन्धित संस्थानों द्वारा आकस्मिक रूप से पशुरोगों के फैलने की सूचना और निदान उपायों के सैम्पल जांच के लिए एपेक्स सेन्टर को प्रेषित किए जाते हैं। एपेक्स सेन्टर के वैज्ञानिक आवश्यकतानुसार मौके पर पहुंच कर रोगों की रोकथाम करते हैं। केन्द्र द्वारा प्रति माह संभावित पशु रोगों का बुलेटिन भी जारी किया जाता है और रोगों की मॉनिटरिंग की जाती है। समय–समय पर सर्वे द्वारा राज्य पशुधन स्वास्थ के बारे में आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। सेन्टर द्वारा क्षेत्र में कार्यरत पशु चिकित्सकों और पशुपालकों के लिए रोग निदान और उपचार बाबत तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। इनके लिए पृथक से पाठ्यक्रम भी निर्धारित किया हुआ है। दृश्य एवं श्रव्य की 16 सीडी में विभिन्न रोगों के निदान और उपचार का उपयोग वेटरनरी छात्र/छात्राएं और क्षेत्र में कार्यरत पशु चिकित्सकों द्वारा किया जाता है। सेन्टर द्वारा राज्य के 1546 पशु चिकित्सकों और पेरावेट को 78 बैच में प्रशिक्षण दिया गया है। छतीसगढ़ प्रांत से भी 4 बैच में 83 पशु चिकित्सकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया है। सेन्टर द्वारा भेड़, बकरी, गाय, भैंस, घोड़े, ऊंट, मुर्गियों में होने वाले विभिन्न प्रकार के रोगों का उपचार कर राहत पहुंचाई गई है। सेन्टर द्वारा वर्तमान में राज्य के चिड़ियाघरों में रखे गए वन्य जीवों में आंतरिक परजीवियों के प्रकोप के बारे में सर्वे कार्य किया जा रहा है।

एपेक्स सेन्टर, राजूवास, बीकानेर

पशुओं में लू (तापघात) की पहचान एवं प्रबंधन कैसे करें

वातावरण में बहुत अधिक गर्मी होने से पशु को लू लगने का अंदेशा रहता है। लू (तापघात) से प्रभावित पशु के शरीर का तापमान बहुत ज्यादा बढ़ जाता है, नाड़ी दर बढ़ जाती है, पशु को सांस लेने में तकलीफ होती है तथा पशु को अकड़न के बाद बेहोशी आ जाती है। अंत में श्वसन प्रक्रिया रुकने से पशु की मृत्यु भी हो सकती है। वातावरण में बहुत ज्यादा गर्मी, पशु को संकरे तथा अवातानुकूलित कमरे में रखना, ज्यादा भीड़–भाड़, परिवहन के समय बहुत ज्यादा थकावट एवं गर्मी होना, पानी की कमी आदि लू लगने के मुख्य कारण होते हैं। लू लगने के लक्षणों में मुख्यतया पशु का सुस्त एवं उदास होना, मुंह खोलकर सांस लेना, नाक तथा मुंह से झागदार श्राव निकलना, तापमान का बहुत अधिक बढ़ जाना, सांस एवं नाड़ी दर का बढ़ना, जीभ का बाहर निकालना, आंखों की श्लेष्मा झिल्ली में रक्त जमाव होना, अकड़न तथा अंत में मृत्यु होना हैं।

लू लगने से बचाव के उपाय एवं प्रबंधन

1. गर्मी के समय पशु को छायादार स्थान पर अथवा वृक्ष के नीचे बांधना चाहिए।
2. पशुओं को समय–समय पर ठंडा पानी पिलाना चाहिए तथा अगर सम्भव हो तो ठंडे पानी का एनिमा (गुदा में ठंडा पानी डालना) भी कर सकते हैं।
3. पशुओं को ऐसे कमरों अथवा बाड़े में रखना चाहिए जहां पर प्रकाश तथा हवा का आसानी से आवागमन हो सके। कमरे के सारे दरवाजे तथा खिड़कियां खुली होनी चाहिए। अगर सम्भव हो तो डेयरी इत्यादि में पंखों की व्यवस्था भी होनी चाहिए।
4. लू लगने पर पशुओं को चाटने के लिए बर्फ की सिल्ली अथवा सांचे देने चाहिए।
5. लू लगने पर पशु को ठंडे पानी से नहलाना अथवा ठंडे पानी में तैराना भी तापमान कम करने में लाभदायक सिद्ध होता है।
6. तेज तापमान होने पर पशु को तापमान कम करने वाली दवा जैसे पैरासिटामोल देनी चाहिए।
7. समय–समय पर पशु का तापमान लेना चाहिए तथा पशु का सामान्य अवस्था में आने तक लगातार तापमान कम करने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए।

प्रो. ए. के. कटारिया, राजुवास, बीकानेर, (मो. 9460073909)

पशुओं में अत्याधिक तनाव (स्ट्रेस) के उत्पन्न होने के कारण एवं स्वास्थ्य पर कुप्रभाव

मनुष्यों में स्ट्रेस या तनाव को काफी महत्व दिया जाता है,क्योंकि ये कई बीमारियों का कारण बन जाता है। पशुओं में होने वाले शोध कार्यों ने ये सिद्ध कर दिया है कि पशुओं में भी तनाव उत्पन्न होता है। ऐसी कोई भी स्थिति जो कि पशु शरीर के लिए खतरा पैदा कराती है, तनाव कहलाती है, इसे स्ट्रेस भी कहा जाता है। मनुष्य अपनी बात आसानी से कह सकते हैं अतः सब यह समझते हैं की स्ट्रेस सिर्फ उनमें ही हो सकता है। वैज्ञानिकों के अनुसार पशुओं में भी उतना ही तनाव होता जितना की मनुष्यों में। पशुपालकों के लिए यह बहुत जरूरी होता है कि कैसे जाने कि पशु तनाव में है या नहीं। इसके लिए पशुओं के सामान्य व्यवहार के बारे में जानकारी रखनी चाहिए । सामान्य व्यवहार में जरा भी परिवर्तन आये तो ध्यान रखें और उन परिवर्तनों के बारे में नजदीकी पशुचिकित्सक को बताएं ताकि अत्यधिक तनाव से उत्पन्न होने वाले खतरों से पशुओं को समय पर बचाया जा सके।

पशुओं में अत्यधिक तनाव उत्पन्न होने के कई कारण हो सकते हैं जिनमें मुख्य कारण –

1. पशु के स्थान में बदलाव होना तनाव उत्पन्न होने का एक कारण बन जाता है। नए स्थान में आने पर पशु को भी स्ट्रेस हो सकता है। कई बार सामान्य स्थिति आने में कुछ दिन लग जाते हैं, ऐसी स्थिति में पशु का विशेष ख्याल रखें। पशु के शरीर पर हाथ फिराएं एवं उसे ज्यादा समय दें, इससे पशु नई परिस्थिति में जल्दी अभ्यस्त होगा एवं तनाव में भी नहीं आएगा।
2. पशु को परिवहन के कारण भी स्ट्रेस होता है, बहुत बार ट्रक इत्यादि से परिवहन करना आवश्यक हो जाता है, ऐसी परिस्थितियों में पशु का विशेष ध्यान रखें।
3. मौसम में बदलाव पशुओं में स्ट्रेस का एक महत्वपूर्ण कारण है, बहुत ज्यादा गर्मी या सर्दी पशुओं में तनाव पैदा कराती है। बदलते मौसम में पशुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
4. छोटे बाड़े में ज्यादा पशुओं को रखना भी स्ट्रेस का एक कारण होता है। जगह की कमी से कई बार पशुओं को चोट लगने का भी खतरा हो जाता है, इस बात का विशेष ख्याल रखा जाना चाहिए कि बाड़े में प्रत्येक पशु को पर्याप्त जगह मिले।
5. पशु के रहने के स्थान पर गन्दगी रहना भी पशुओं में तनाव पैदा होने का एक कारण होता है, गन्दगी तनाव के अतिरिक्त दूसरी बीमारियों को भी जन्म देती है।
6. पशुओं के बाड़े में मक्खी, मच्छर, चींचड़ इत्यादि का होना भी पशु को तनावग्रस्त कर देता है। पशुपालकों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए की बाड़े में मक्खी,कच्छर चींचड़ इत्यादि उत्पन्न न होने पाएं। समय समय पर इनकी रोकथाम के समुचित उपाए करने चाहिए।
7. पशुपालकों को पशुओं के पीने के पानी के प्रति जागरूकता रखनी चाहिए। अपर्याप्त पानी से पशुओं में पानी की कमी हो जाती है, यह डिहाइड्रेशन और साथ में तनाव का भी कारण बनती है, इसके लिए यह जरूरी है कि पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में समय समय पर दिया जाये। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि पानी साफ हो, पीने के जल के

शेष पेज 5 पर...

गाय–भैसों में दुग्ध प्रबन्धन

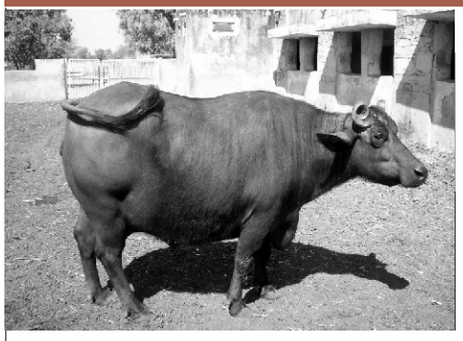

स्वस्थ पशु, संतुलित आहार, उत्तम आवास और दूध निकालने की सही विधि ही सफल दुग्ध प्रबंधन का आधार माना जाता है।

दूध उत्पादन एंव वयस्कता का महत्वः–

वयस्कता का अर्थ है पूर्ण विकसित जननांग क्रियाशील हों एंव उनमें प्रजनन की क्षमता आ जाए। मादा में मद चक्र का आरम्भ होना, इसका सूचक है। वयस्कता आनुवंशिक कारकों, उम्र, वातावरण, पोषण व्यवस्था, वृद्धिदर, आदि कारकों से प्रभावित होती है। उच्च पोषणमान पर रखे गये पशुओं में वयस्कता कम उम्र में आ जाती है। सामान्यतः जब पशु वयस्क पशु का 40% भार ग्रहण कर लेता है तो उसे प्रजनन हेतु उपयोग में लिया जा सकता हैं। आयु की तुलना में शरीर का भार वयस्कता का अच्छा संकेतक हैं, इसीलिए बछड़ियों के पोषण का उचित ध्यान रखना आवश्यक है। अच्छा पोषण मिलने पर पशुओं के अयन में फैट पैड़ का निर्माण 6 महीने की अवस्था में होने लगता है, ऐसे पशु जिनमें फैट पैड़ जल्दी एंव अच्छे बनते हैं वे ज्यादा दूध उत्पादन करते हैं।

पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता उसके आनुवंशिक गुणों तथा उसको दिये जाने वाले आहार एंव उनके सही रख–रखाव पर निर्भर करती है। बहुधा हमारे देश में पशुओं को संतुलित आहार एंव खनिज लवण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते हैं, जिससे उत्पादन क्षमता कम रहती है। यदि दाने के साथ अच्छे किस्म के खनिज लवणों को दिया जावे तो शरीर में इनकी कमी नहीं होगी। प्रायः पशुओं में आयोडीन की कमी होती है जिसकी पूर्ति के लिए आयोडीन युक्त नमक प्रतिदिन 30–50 ग्राम देना चाहिए। आजकल क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार (Area specific Mineral Mixture) मिनरल मिक्चर बाजार में उपलब्ध हैं, जिसके प्रयोग से पशुओं को वे खनिज लवण मिल जाते हैं जिसकी उनके शरीर में कमी रहती है।

दूध पावसने के लिए गलत प्रयास न करें

ऑक्सीटोसिन पशु स्वास्थ पर दुष्प्रभाव के कारण प्रतिबंधित किया गया है। इसके घातक परिणाम हो सकते हैं। प्रजनन तंत्र पर विपरीत असर, जिसके कारण प्रजनन काल कुछ वर्षो तक ही सिमट कर रह जाता है, पशुओं में ताव के लक्षण कम आना, पशुओं का ग्याभिन न होना, दुग्ध काल (Lactation Period) में गिरावट, लम्बे समय तक प्रयोग में लेने से दूध की मात्रा एंव गुणवत्ता में गिरावट, भ्रूण का पूर्ण विकास न होना एंव जल्दी मर जाना और गर्भपात होना।

यह दवा केवल पंजीकृत पशु चिकित्सक के द्वारा लिखे जाने पर ही खरीदी जा सकती है, इस नियम की पालना न करने पर खरीदने एंव बेचने वाले व्यक्ति पर जुर्माने का प्रावधान है।

दूध दुहान–

गाय–भैसों को दुहाने से पूर्व उसके अयन को साफ पानी से धोना चाहिए, एंव पशु के बांई और बैठकर दुहना चाहिए। किन दो थनो से एक बार दूध निकाला जाये यह दूध निकालने वाले की सुविधा एंव दक्षता पर निर्भर करता है। दूध को हमेशा थन दबाकर दुहना चाहिए न कि खींचकर। दूध दुहान करते समय शुरू की कुछ मात्रा स्ट्रिप कप में

डालकर थनैला रोग की जांच कर लेनी चाहिए। पूर्ण हस्त विधि (Full hand milking) द्वारा दुहान के पश्चात् बचे हुए दूध को स्ट्रिपिंग द्वारा निकालना चाहिए। इस दूध में (अंत के) वसा की मात्रा अधिक होती है। अंगुली एंव अंगूठे द्वारा दुहान (स्ट्रिपिंग) छोटे थनों वाले पशुओं एंव ओसरों के लिए अच्छी रहती है। कभी भी अंगूठे की गांठ का उपयोग दुहान में नहीं करना चाहिए, ऐसा करने से गांठ की जगह अधिक दबाव पड़ता है, जिससे पशु को थन में दर्द की अनुभुति होती हैं। कभी–कभी अधिक दबाव के कारण थन की आंतरिक परत में चोट पहुंचती है जिससे थनैला रोग होने की संभावना रहती है। सफल दूध दुहान के लिए पशु में पावस ठीक प्रकार से आना चाहिए इसके लिए पशु के अयन को उचित तरीके से संवेदना देना जरूरी है। यह अयन को गुनगुने पानी से धोने से या बछड़े–बछड़ी को पास में लाने से दी जा सकती है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव 7–8 मिनिट तक रहता है, इसलिए दूध दुहने की सम्पूर्ण प्रक्रिया लगभग 5–6 मिनिट में पूर्ण हो जानी चाहिए नहीं तो अयन में कुछ दूध रह जायेगा। अयन में दूध रह जाने से पशु पर निम्न प्रतिकूल प्रभाव हो सकते हैं–

1. अयन में दूध रूक जाने की वजह से थनैला रोग हो सकता है।

शेष पेज 5 पर...

....पेज 4 का शेष दुग्ध प्रबन्धन

2. दूध अयन में पड़ा रहने से अयन की कोशिकाओं पर अनावश्यक दबाव पड़ता है, जिससे दूध उत्पन्न करने वाली कोशिकाएं दूध उत्पादन बंद कर देती है एंव दिन–प्रतिदिन पशु के दूध में कमी आने लगती है।
3. पशु समय से पहले ही सूख जाता है।
4. अंत के दूध में वसा की मात्रा ज्यादा होती है। इस तरह यदि अंत का दूध नहीं निकल पा रहा है तो पशुपालक को कुल वसा की मात्रा भी कम मिल पाती है।

मौसम का दूध उत्पादन पर असर–

भैंसे ज्यादातर सर्दी के महीने में बच्चा देती हैं। इस समय हरा चारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है तथा दूध भी अधिक मात्रा में बनता है। गर्मी का मौसम आने तक पशु का दूध भी उतार पर होता है तथा हरा चारा भी कम हो जाता हैं। इसी कारण दूध की उपलब्धता कम हो जाती हैं एवं दाम भी बढ़ जाते हैं। इसलिए यह जरूरी हैं कि पशुओं में खासतौर से भैंसों में ऋतुचक्र का इस प्रकार से प्रबन्धन करें जिससे ज्यादा से ज्यादा पशु जनवरी से मई के महीने में बच्चा दे। इससे गर्मी के मौसम में दूध का उत्पादन भी कम नहीं होगा और आमदनी अच्छी होगी।

डॉ. सुनीता पारीक वेटरनरी कॉलेज
नवानियां, वल्लभनगर, उदयपुर
(मो 9461245845)

दुग्ध की संरचना को भी जानिये

दूध में उपस्थित तत्व	गाय	भैंस	बकरी	भेड़
प्रोटीन (ग्राम प्रति 100 ग्राम)	3.2	4.5	3.1	5.4
वसा (ग्राम प्रति 100 ग्राम)	3.9	8.0	3.5	6.0
कार्बोहाइड्रेट (ग्राम प्रति 100 ग्राम)	4.8	4.9	4.4	5.1
उर्जा (किलो केलोरी)	66	110	60	95
शर्करा (लेक्टोज) (ग्राम प्रति 100 ग्राम)	4.8	4.9	4.4	5.1
फेटी ऐसिड अ. मोनोसेचुरेटेड़ (ग्राम प्रति 100 ग्राम)	1.1	1.7	0.8	1.5
ब. पोलीसेचुरेटेड़ (ग्राम प्रति 100 ग्राम)	0.1	0.2	0.1	0.3
कोलेस्ट्रोल (मिग्रा प्रति 100 ग्राम)	14	8	10	11
कैल्शियम(अ.रा. यूनिट्स)	120	195	100	170

....पेज 3 का शेष पशुओं में तनाव

तापमान का भी खास ख्याल रखना चाहिए जैसे की गर्मी में पानी ठंडा हो तथा सर्दी में गुनगुना हो या अत्यधिक ठंडा न हो।

8. चारा रखने की जगह साफ होनी चाहिए, चारे–बांटे में एकदम बदलाव नहीं करना चाहिए।

पशुओं में अत्यधिक तनाव उत्पन्न होने के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले कुप्रभाव :–

पशुओं में अत्याधिक तनाव उत्पन्न होने के कारण स्वास्थ्य पर कई तरह के कुप्रभाव हो सकते हैं। अत्याधिक तनाव उत्पन्न होने के कारण पशुओं की भूख कम हो जाती है, इसका पाचन क्रिया पर सीधा असर होता है, पशु को पतले दस्त हो सकते हैं या गोबर का आना कम हो सकता है। कम खाने से पशु

सूखने लगता है उसके उत्पादन पर असर होता है, कई बार यह देखने में आता है कि नयी जगह पर आने से पहले पशु का दुग्ध उत्पादन अच्छा होता है, लेकिन बाद में उत्पादन बिल्कुल कम हो जाता है। यह परिस्थिति अत्यधिक तनाव की वजह से हो जाती है, इसकी वजह से पशु की मांस पेशियां भी कमजोर हो सकती है, जिससे उसे उठने–बैठने चलने में तकलीफ हो सकती है। शरीर के कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है। अत्यधिक तनाव से सांस तेज हो सकती है और ब्लड प्रेशर भी बढ़ सकता है। लम्बे समय तक तनाव के चलने से पशु का स्वास्थ्य प्रभावित हो जाता है, पशु का प्रतिरक्षा तंत्र कमजोर हो जाता है जिससे बीमारियों से लड़ने की ताकत कम हो जाती है। बीमारियों से ग्रसित होने का खतरा बढ़ जाता है। तनाव की वजह से पशु की शारीरिक क्रियाओं में ऐसे बदलाव होते है और उत्पादन प्रभावित हो जाता है। पशु की प्रजनन क्षमता पर असर हो सकता है।

बचाव के उपाय :–

पशुओं में अत्याधिक तनाव उत्पन्न करने के कारणों को रोकना ही बचाव का सबसे अच्छा उपाय है। पशुपालकों को पशुओं के उचित रख–रखाव की तरफ ध्यान देना चाहिए। अच्छे पशु घर का निर्माण करना चाहिए। पशुओं को बदलते मौसम में खास ध्यान रखना चाहिए। खानपान में धीमा बदलाव करना चाहिए। परिवहन के समय पशुओं का ध्यान रखना चाहिए, पशु के खुरों की उचित देखभाल करनी चाहिए, पशु बाड़ों में पशुओं को मक्खी,मच्छरों एवं चींचड़ों इत्यादि से बचने के उपाय करने चाहिए। पशुओं के व्यवहार में बदलाव दिखने पर पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए पशु की उचित देखभाल अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने में सहायक सिद्ध होती है।

प्रो. नलिनी कटारिया, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो. 9460073879)

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

गर्म वातावरण के दौरान राठी गायों में एल्डोस्टीरॉन का आक्सीकृत तनाव एवं इलेक्ट्रोलाइट्स से सम्बन्ध

कुछ पशु प्रजातियों में हुए अनुसंधान से यह पता लगा कि गर्म वातावरण एक प्रकार का तनाव उत्पन्न करता है, जिसे आक्सीकृत तनाव कहते ं इस प्रकार के तनाव में शरीर में पाये जाने वाले विभिन्न महत्वपूर्ण तत्वों का भी असन्तुलन हो जाता है। यदि यह प्रक्रिया लम्बे समय तक चलती है तो पशु का उत्पादन कम और उसके स्वास्थ पर कुप्रभाव हो सकता है। राठी गायों में इस तरह के अनुसंधान की कमी को देखते हुए वर्तमान में अनुसंधान किया गया जिसमें गर्भवती, गैर गर्भवती, एक बार बच्चे जन्मी हुई तथा एक से अधिक बार बच्चे जन्मी राठी गायों को शामिल किया गया है। इस अनुसंधान को करने के लिए राठी गायों से मध्यम वातावरण (अक्टूबर से नवम्बर) और गर्म वातावरण (मई से जून) में रक्त के छोटे नमूने लिये गये एवं उनका विश्लेषण किया गया और यह पाया गया कि गर्म वातावरण के दौरान आक्सीकृत तनाव पैदा होता है।

गर्म वातावरण के दौरान राठी गायों में हारमोन एल्डोस्टीरॉन का आक्सीकृत तनाव व विभिन्न तत्वों के साथ पारस्परिक सम्बन्ध देखा गया एवं उनका आंकलन किया गया। इसमें यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अत्यधिक गर्म वातावरण सभी कायिकी अवस्था की राठी गायों में आक्सीकृत तनाव उत्पन्न करता है। आक्सीकृत तनाव उत्पन्न होने की सीमा गैर गर्भवती तथा एक बार बच्चे जन्मी हुई गायों की तुलना में गर्भवती तथा एक बार से अधिक बच्चे जन्मी हुई गायों में अधिक थी। यह शारीरिक विविधताओं और तीव्र पर्यावरण की स्थिति में आक्सीकृत तनाव की भूमिका को फिर से परिभाषित करने, नैदानिक निदान के लिये इन जानवरों के स्वास्थ्य प्रबन्धन में इस्तेमाल किया जा सकता है। वर्तमान अध्ययन के परिणाम पशु चिकित्सा नैदानिक शरीर क्रिया विज्ञान के क्षेत्र में राठी पशुओं में भविष्य में अनुसंधान के लिए आधारभूत ढांचा प्रदान करेगें। **शोधकर्ता :- अनिता मीणा, मुख्य समादेष्टा -प्रो. नलिनी कटारिया**

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-मई, 2014

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
खुरपका–मुँहपका रोग (Foot and Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी,	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनुं, अनूपगढ़, सवाई माधोपुर, धौलपुर
गलघोंटू (Haemorrhagic Septicaemia)	भैंस, गौ–वंश	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, बून्दी, राजसमन्द, पाली, टोंक, उदयपुर
ठप्पा रोग (Black Quarter)	भैंस, गौ–वंश	अनूपगढ़, जयपुर
पी.पी.आर. (PPR)	बकरी	सवाई माधोपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर
सर्रा (Trypanosomiasis)	भैंस, ऊँट	धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, अनूपगढ़, बाँसवाड़ा
फड़किया रोग (Enterotoxemia)	भेड़, बकरी	सवाईमाधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर
अन्तःकृमि (Internal parasites)	गौ–वंश, भैंस	अनूपगढ़, बून्दी, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बीकानेर, कोटा
खुजली (Mange)	ऊँट, बकरी, भेड़	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर

मुर्गियों में निम्न रोगों के होने की सम्भावनां हैं जिनके हिन्दी में नाम प्रचलित नहीं होने के कारण अँग्रेजी नाम दिये जा रहे हैं। मुर्गी पालकों से निवेदन हैं कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी निकटतम पशु चिकित्सालय के चिकित्सक से प्राप्त कर लें – Infectious Bursal Disease (IBD), Chronic Respiratory Disease (CRD), Respiratory Disease Complex, Leucosis, Colibacillosis, Coccidiosis, Round & Tape Worms and Coryza.

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर ।

फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी

छोटी जोत के साथ भेड़पालन से आई समृद्धि

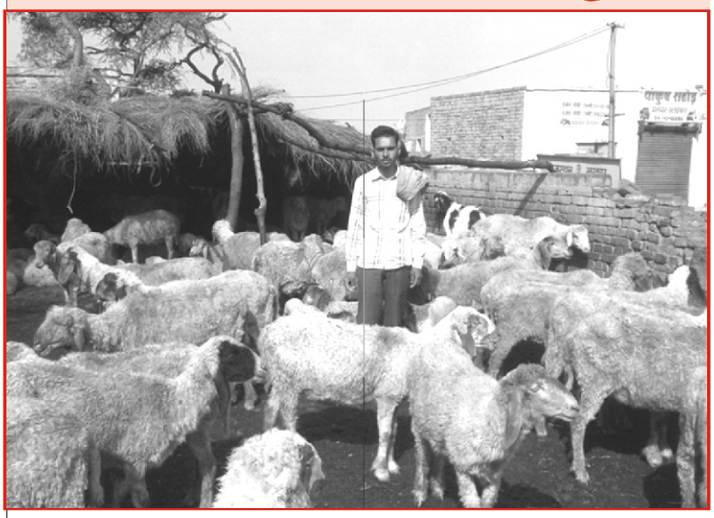

छोटी जोत वाले किसानों को अपनी आजीविका चलाने के लिए मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, लेकिन नोहर (हनुमानगढ़) के युवा किसान अनवर ने पशुपालन को साथ अपना कर इस मुश्किल को आसान बना लिया। अनवर के पास खेती की जमीन कम होने से आय भी सीमित होती और आर्थिक तंगी से दो–चार होना पड़ता था। उसने समझदारी से काम लिया और अपने खेत में भेड़–बकरी पालन शुरू कर अतिरिक्त आय का जरिया बना लिया। अगर खेती के साथ पशुपालन को साथ में रखा जाऐ तो आर्थिक सहारा मिलता है और वह खेती में विभिन्न रूप से सहायक होती है। अनवर ने भेड़पालन के सहारे एक नया मुकाम हासिल किया है। उसके अनुसार 2 बीघा जमीन में खेती करके परिवार का गुजारा मुश्किल से चला पाता था तब उसने 20–25 भेड़ों का पालन शुरू किया। अच्छे प्रबंधन से जुड़े सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर इसे आगे बढ़ाया और अब उसके पास करीब 100 चौकला किस्म की भेड़ें एवं 30 बकरियां हैं।

अनवर अपने खेत के पास ही आधे खुले बाड़े में अपनी भेड़ों को रखता है और उनके लिए उपयुक्त घास एवं दलहनी चारा अपने खेत में उगाता है। खेजड़ी,बबूल जैसे वृक्ष भी इसके खेतों में उपलब्ध हैं। साल में दो बार (श्रावण एवं फाल्गुन माह में) ऊन की कताई कर बाजार में बिक्री करता है। हर साल रेवड़ की छंटाई भी करता है जिसमें अवांच्छित नर–मेमने जिनका बंधियाकरण कर दिया गया हो एवं कम उत्पादन वाले पशुओं का विक्रय करता है। इस तरह ऊन, मांस, खाल, खाद्य एवं दूध से आर्थिक लाभ प्राप्त करता है। करीब 40,000/ रू. सालाना की आय होती है। कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर से प्रशिक्षण लेने के बाद अनवर का मानना है कि वह अपने आप को भेड़पालन में और अधिक सक्षम बना पाया। कृषि विज्ञान केन्द्र के निरन्तर संपर्क में रहने से दवा, टीकाकरण एवं प्रबंधन संबधी विभिन्न जानकारी का लाभ भी उसे मिलता है। आज वह क्षेत्र के भेड़पालकों में अग्रणीय है और अन्य भेड़पालकों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना हुआ है।

(अनवर मो. 09828216941)

मुख्य समाचार

विश्व वेटरनरी दिवस समारोह सम्पन्न

बीकानेर। पशुधन संपदा से खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए देश में पशुचिकित्सकों और पेरावेट की महत्वपूर्ण भूमिका और मांग सर्वाधिक बनी रहेगी। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने विश्व वेटरनरी दिवस के मुख्य समारोह को संबोधित करते हुए ये उद्‌गार प्रकट किए। वेटरनरी कॉलेज के सभागार में विश्व वेटरनरी दिवस पर भाषण, वेटरनरी क्विज और पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. ए.पी. व्यास ने वर्ल्ड वेटरनरी डे की "पशुकल्याण" थीम पर कहा कि हमारे देश में प्राचीन काल से ही पशुओं के प्रति दया और कल्याण का भाव हमें विरासत में मिला है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि वेटरनरी दिवस पूरे विश्व में महान पेशे और कर्तव्यों की याद दिलाता है। पूरी दूनिया में भारत ही एक ऐसा देश है जहां पशुओं के प्रति आदर और दया के साथ–साथ संरक्षण के विभिन्न कानूनी प्रावधान भी हैं। समाज और अर्थव्यवस्था में पशुधन उत्पादों का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि की संसदीय समिति की रिपोर्ट में चिकित्सकों, पेरावेट और तकनीशियनों के लिए नए पाठ्यक्रम शुरू करने पर जोर दिया गया है। वेटरनरी क्षेत्र में वाणिज्य और व्यापार, जनस्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा के नए आयाम जुड़ रहे हैं।

''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम अब राज्य के सभी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित होगा

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य के पशुपालकों और कृषकों के लिए प्रत्येक गुरूवार को सांयः 7.15 बजे धीणे री बात्यां में पशुपालन पर वैज्ञानिक वार्ताओं का प्रसारण अब दिनांक 15 मई 2014 से राज्य के सभी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक गुरूवार सांयः 5.30 बजे प्रसारित किया जाएगा। पूर्व में यह केवल बीकानेर केन्द्र से ही प्रसारित होता था।

निदेशक की कलम से...

पशुचिकित्सा सेवाओं का उपयोग समय की जरूरत है

स्वस्थ पशुधन से ही अधिक उत्पादन लिया जा सकता है। अतः निरोगी और हष्ट–पुष्ट पशु हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। पशुपालकों के पास पारंपरिक ज्ञान की कोई कमी नहीं है,और वे छोटी–मोटी बीमारियों का इलाज अपने स्तर पर ही कर लेते हैं, लेकिन पशु चिकित्सा सेवाओं का उपयोग किया जाना समय की जरूरत है। असामयिक दुर्घटनाओं, महामारियों और अन्य रोगों से कीमती पशुधन को बचाने के लिए पशु चिकित्सक की सलाह और सेवाओं का अन्य कोई विकल्प नहीं है। पशु चिकित्सक का कृषकों– पशुपालकों के साथ उचित समन्वय होने से पशुओं के स्वच्छ रख–रखाव, रोगों का पूर्वानुमान, निगरानी और शीघ्र उपचार शुरू होने से पशुधन को लाभ मिलता है। ये सेवाएं पशुधन उत्पादकों को रोग के उन्मूलन अथवा रोकथाम, खाद्य सुरक्षा, हानि नियंत्रण पशु पोषण और उनसे जुड़ी जानकारी तथा प्रशिक्षण उपलब्ध कराती है। पशु चिकित्सा सेवाएं जैविक उत्पादों एवं रोग प्रतिरोधक दवाइयों का पशुपालन में जिम्मेदार और विवेकपूर्ण उपयोग को भी सुनिश्चित करने में केन्द्रीय भूमिका निभाती है इससे रोगाणुरोधी प्रतिरोध विकास एवं पशु मूल के खाद्य पदार्थो में दवाओं के असुरक्षित स्तर के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है। पशुओं के रोग, पशुजन्य रोग और मांस स्वच्छता के प्रमाणन की जिम्मेदारी भी पशु चिकित्सकों की है। हालांकि खाद्य प्रसंस्करण और स्वच्छता का प्रमाणन दूसरे व्यवसायों (सेनेटरी प्रमाण पत्र) के द्वारा भी प्रदान किया जा सकता है। अधिकांश मामलों में खाद्य जनित रोगों के प्रकोप प्राथमिक उत्पादन के दौरान जूनोटिक एजेन्टों से भोजन द्वारा होना पाया गया है। पशु चिकित्सा सेवाओं का इस तरह फैलने वाली बीमारियों की जाँच (सीधे फील्ड से स्त्रोत तक) तथा इनकी रोकथाम के उपायों को पहचानने एवं लागू करने में विशेष भूमिका है। यह कार्य मानव एवं पशु स्वास्थ्य पेशेवरों, विश्लेषकों, एपिडिम्योलॉजिस्ट, खाद्य उत्पादकों, प्रसंस्करणकर्ताओं और व्यापारियों के निकट सहयोग से ही संभव है। भारत में सरकारी और निजी क्षेत्र में कार्यरत पशु चिकित्सक पशु स्वास्थ्य, फीड और चारा उत्पादन, खाद्य सुरक्षा मुद्दों में निरंतर सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। एक पशु चिकित्सक, समाज कल्याण एवं खाद्य सुरक्षा से जुड़े रहकर निरंतर अपनी सक्रिय भूमिका अदा करते हैं।

प्रो. (डॉ.) चन्द्रेश कुमार मुरड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक

आकाशवाणी बीकानेर से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत मई 2014 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.स.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो. कर्नल (डॉ.) ए. के. गहलोत कुलपति, राजुवास	राज्य के पशुपालन विकास में राजुवास का योगदान	15.05.2014 सांयः 5.30 बजे
2	डॉ. राधेश्याम आर्य पशुपोषण विभाग	पशु पोषण में यूरिया मोलेसेज का प्रयोग	01.05.2014 सांयः 7.15 बजे
3	प्रो. सुभाष गोस्वामी विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग	पशुओं को वर्षभर हरा चारा खिलाने का प्रबन्धन	08.05.2014 सांयः 7.15 बजे
4	डॉ. रजनी जोशी जनस्वास्थ्य विभाग	दूषित पानी से मनुष्यों व पशुओं में फैलने वाले रोग व उनकी रोकथाम	22.05.2014 सांयः 5.30 बजे
5	प्रो. एस. बी. एस. यादव एबीजी विभाग	गर्मियों में तापघात से पशुओं का बचाव कैसे करें	29.05.2014 सांयः 5.30 बजे

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को आकाशवाणी बीकानेर के मीडियम वेव 215.05 मीटर (1395 किलो हर्टस) पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

मुस्कान !

संपादक
प्रो. सी. के. मुरड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
उपनिदेशक (जनसम्पर्क)
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : मई, 2014

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी. के. मुरडिया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : सी. के. मुरडिया